International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 11 Issue 4, July-August, 2023, Impact Factor: 7.326

भारतवर्ष में एल. जि. वि. टि किउ+ संप्रदाय के अवस्थितिः एक अध्यन

श्रीमती मिताली कुमारी[1], श्रीमान डॉ रंजन कलिता[2]

[1]पीएच. डी शोधार्थी, गौहाटी विश्वविद्यालय
[2]अध्यक्ष, रंगापारा कॉलेज, शोणितपुर, असम

सरांशः

प्रकृति की अनुपम कृतियो में एकहै मानव। मानव जीव श्रेष्ठ है। मानव के पास अपना समाज-संस्कृति परिवार आदि सभी है। एकतरफ मानव अपनी बृद्धि का सही इस्तेमाल करके चांद, मंगल में कदम रख चुके है, वहीं दुसरी तरफ अपने लोगो के बीच में समता वे एकता स्थापित करने में असमर्थ रहा। मानव इस इक्कीसवी शताब्दी में भी जाति, वर्ण, श्रेणी, लिंग के आधार पर बंटे हुए है। प्राचीन काल से चली आई प्रथा का आज भी निवारण नही हो पाया। हमारे समाज की सबसे बड़ीस समस्या है जात-पात-लिंग आदि ते सीमांकन। समाज में हर चीज की एकसीमा निर्धारित किया गया है। इस सीमा के हासिये तथा बाहर के हर एकचीज की असाधारण तथा असामान्य घोषित किया गया है। जैसे समाज में पुरुष एवं नारी की सीमा के तहत उनको साधारण तथा सामान्य माना जाता है। पर इसी समाज के अंश एल. जि. बि. टि. किउ+ संप्रदाय को असामान्य की नजरो से देखने के साथ उस पुरे वर्ग को हासिये में रहा जाता है। इस वर्ग को केवल लिंग पहसान के आधार पर तिरस्कार का सामना करना पड़ता है। समाज में पुरूष एवं नारी के अलावा इन वर्गो कों मान्यता प्राप्त नहीं होती। परंतु इस वर्ग की अवस्थिति सृष्टिकाल से ही थी। प्राचीन समाज, साहित्य तथा संस्कृति में इस वर्ग की अवस्थिति पायी जाती है। इस आलोचना पत्र के जरिये एल. जि. बि. टि. किउ+ संप्रदाय के अवस्थिति के बारे में चर्चा करने का प्रयास करते है।

कुजी शब्द : एल. जि. बि. टि. किउ+ संप्रदाय, अवस्थिति, लिंग पहसान, असामान्य

भारतवर्ष दक्षिण एशिया के एकसार्वभौम लो·तान्त्रिक देश है। भारतवर्ष में विविध प्रकार के जाति, धर्म, भाषा, वर्ण वे संस्कृति के लोग एकसाथ वास करते है। लेकिन एसी विविधता में भी एकता की भावना को देखा जा सकता है। इसी कारण भारतवर्ष विविधता तथा अनेकता में एकता (Unity in diversity)का देश के नाम से प्रशिद्ध है। यह भारत की विशेषता है। भारतवर्ष में विविध धार्मिकसंप्रदाय

(हिंदु संप्रदाय, इसलाम संप्रदाय बोद्ध संप्रदाय, ईसाइ संप्रदाय, जैन संप्रदाय, सिख संप्रदाय), विविध संस्कृति (प्रत्येकधर्म से प्रेरित संस्कृति), विविध भाषिकसंप्रदाय के लोग (असमीया, माराठी, तामिल, बिहारी, बंगाली आदि)। विविध श्रेणी (ब्राह्मण, क्षत्रिय, बैश्य, शुद्र) वे (अभिजात, मध्यम तथा निम्न श्रेणी) विभिन्न यौन अभिव्यक्ति के लोग (पुरुष, नारी तथा एल. जि. वि. टि. किउ+) आदि सभी एकता के साथ निवास कर रहे है।

जैसे हर जाति–धर्म, वर्ण के भेद के बाबजुद सभ्यता के साक्षी बनकर सृष्टि के प्रारंभ से भारतीय समाज मे एकसाथ रह रहे है। उसी तरह उसी समाज मे स्थित एकसंप्रदाय है एल. जि. वि. टि. किउ+ संप्रदाय। नारी एवं पुरुष के भांति उनके विद्यमानता या वजुद को प्राचीन कहा जा सकता है। वैदिकयुग से ही इनकी मौजुदगी है। प्राचीन साहित्य, मुर्तिकला एवं वास्तुकला, संस्कृति आदि हर जगह इस संप्रदाय के वजुद का प्रमाण पाया जाता है।

प्राचीन भारतीय साहित्य 'वेद', 'पुराण', 'मनुसंहिता', 'रामायण', 'कामसुत्र', 'महाभारत' आदि ग्रंथो में समलैंगिक, किन्नर तथा नपुंसक, ट्रांसजेंडर आदि के उल्लेख मिलते है। 'महाभारत' के शिखण्डी को प्राचीन भारतीय साहित्य की प्रथम ट्रांसजेंडर चरित्र कहा जा सकता है। इसी महाकाव्य में वृहन्नला तथा इरावण चरित्र भी इसी संप्रदाय से ताल्लुकरखते है। 'रामायण' में किम्पुरुष तथा किन्नर के जन्म के बारे में उल्लेख मिलता है और एकराजा जिसने वुध से शादी रसाई इसके बारे में भी उल्लेख है।

प्राचीन मुर्तिकला तथा वास्तु·ला में भी इनका उल्लेख मिलता है। उदाहरण के लिए खजुराहो मंदिर, कोणार्कके सुर्य मंदिर, मधेरा के सूर्य मंदिर, विरूपाक्ष मंदिर, सत्यमुर्ति पेरुमल मंदिर, राजस्थान के जैन मंदिर, भुवनेश्वर के लिंमराज मंदिर, कर्णाटकके कल्लेश्वर मंदिर, असम के मदनकामदेव मंदिर आदि विभिन्न मंदिरो में समलैंगिकमुर्तियो की उपस्थिति देखा जा सकता है। भारतीय सभ्यता–संस्कृति के इतिहास में एल. जि. बि. टि. किउ+ संप्रदाय (मुख्य रूप से समलैंगिक, उभयलिंगी, ट्रांसजेंदार) के उल्लेख निक्षित रूप से थे तथा यह संप्रदाय अति प्राचीन है।

समाज में इस संप्रदाय के होने के बावजुद केवल दो लिंगो को स्वीकृति प्राप्त हूई है। पुरूष और नारी। लेकिन इसी समाज मे एल. जि. बि. टि. किउ के लोग भी शामिल है। जो समाज में रहते हुए भी उपेक्षित हो रहे है। इस संप्रदाय के अंतर्गव किन्नर श्रेणी की इतिहास भी बहुत पुरानी है। भारतीय समाज ट्रांसजेंडर को 'नपुंसक' सम्बोधन में ही सीमित करता आ रहा था। ट्रांसजेंडर एक'आमब्रेला टार्म' (Umbrella term) है जिसके अंतर्गत, ट्रांसवमेन (Transwomen), ट्रांसमेन (Transmen), एजेंडर (Agender), किन्नर/हिजड़ा (Kinnar/Hijda), पैनजेंडर (Pangender), युनक (Eunuch), डावल डेकर (Double Dacker), जेंडर फलुइड

(Gender fluid), इंटरसेक्स (Intersex) आदि भी शामिल है। यहा किन्नर संप्रदाय, अपना एकअलग समाज का गठन करते है। हमें एकबात को समझना होगा की हर ट्रांसजेंटर किन्नर नही है। किन्नर और ट्रांसजेंदर मे एकबुनियादी फर्कहैं। जैविकरूप से इन दोनो में कोई भेद नही है। लेकिन सामाजिकरूप से अंतर है। किन्नर संप्रदाय एककठोर रीती रिवाजो से भरपुर संप्रदाय है। जो ट्रांसवमेन अपनी मर्जी से किन्नर समाज में जाना चाहता है उन्हे किन्नर कहा जाता है और जो इस समाज में नही जाते वह सिर्फ ट्रांसवमेन कहलाते है।

किन्नर लोकजीवन तिरस्कृत तथा निर्मम अत्याचारो के शिकार है। इसलिए वे अपनी जगहो से पलायन करके अपने वर्ग के लोगो के साथ समुह बनाकर जीते है। किन्नर जिस जगह समुह बनाकर रहते है। उस जगह को 'घराना' बोला जाता है। किन्नर समाज में घराना प्रथा की मान्यता है। यह परंपरा बहुत पुरानी है। भारतवर्ष में कुल सात घराने है। जैसे भिंडीबाजार घराना, बुलकार घराना, लालन घराना, पुने की घराना, लखनऊ की घराना, दिल्लीकी घराना और हादी इब्राहीम की घराना। यह घराने मे किन्नर अपने गुरू तथा शिष्य के साथ रहते है।

२०११ की जनगणना के अनुसार भारतवर्ष मे लगभग ४ लाख ९० हजार ट्रांसजेंडर थे। लेकिन इसके विशेषज्ञों का मानना यह है की इनकी संख्या ३० लाख से भी ऊपर थी। २०११ से पहले कभी भी ट्रांसजेंडरों की गणना नही हुई थी।

एल. जि बि. टि. किउ एवं कुइर की अवधारणा केवल भारत तकही सीमित नही है। उत्तरी ध्रवं के आर्कटिकक्षेत्रीं की एस्कीमो जाति में एकलोककथा प्रचलित है कि इस धरती पर सबसे पहला दम्पति दो पुरूषो का था परंतु उनके मिलन के बाद गर्भ में पले बच्चे के बाहर निकले का कोई रास्ता नहीं था इसलिए इन में से एकको स्त्री बनना पड़ा। स्कैंडिनेविया की वाइकिं पौराणिककथाओ मे समलैंगिकतथा नपुंसकदेवता के उल्लेख मिलते है। प्राचीन मिस्त्री पुराणो में सेत की कहानी पाया जाता है जहा सेत ने अपने बड़े भाई और मिस्त्र के शासकओसिरिस को मार दाला और उसके बाद ओसिरिस के पुत्र होरस के साथ सम्भोग किया क्युबा की सान्तेरिया पौराणिककथाओं मे एकसमुद्र देवी का वर्णन मिलती है जिसने ने आक्षेषण से अपने ही पुत्र के साथ योन सम्बंध बनाया।

ऐसे बहुत सी लोककथा पुरे विश्व मे पायी जाती है। समाज–साहित्य–संस्कृति आदि हर जगह इनके अवस्तिति के बाबजुद इस संप्रदाय की अंग्रेज सरकार ने १८७१ सन में क्रिमिनेल ट्राइब्स एक्ट (Criminal Tribes Act.) अधिनियम लेकर आयी, जिसमें इस संप्रदाय पर कई प्रतिबन्ध लगा दिए। धारा ३७७ के अन्तर्गत इनके कार्य की गैर जमानती तथा अपराध घोषित कर दिया। प्राचीन काल से जो संप्रदाय एकसामान्य जीवन व्यतीत कर रहे थे। पर यह धारा लगने के बाद धीरे धीरे भारत की जनता को यह लगने लगा कि यह लोग सच मे अपराधी मानसिकता वाले लोग है तथा यह लोग मूल धारा से बाहर है। २०१८ सन में सुप्रीम कोर्ट के विभिन्न कानुनी

लड़ाइयों और सुनबाई के बाद इस संप्रदाय को मान्यता मिली है। हमारी देश तो १९४७ में ही स्वाधीन हो गया पर इस संप्रदाय को स्वाधीन होते होते और ७०–७१ साल लग गये। धीरे धीरे इन लोगो को प्रति लोगो की नजरिया बदलने लगा है।

उपसंहारः

एकसमाज में जैसे नारी–पुरूष की अस्तित्व को मिटा नही सकते। उसी प्रकार एल. जि. बि. टि. किउ+ संप्रदाय के अस्तित्व थी नहीं मिट सकता। कोई नियम, कोई कानुन इसे नही मिटा सकते। यह संप्रदाय हमारे समाज का हिस्सा थे, है और हमेशा रहेंगे। यह समाज जितना हमारा है उतनाही उन लोगो का भी है। हमें न तो उनलोगो को अपराधिक नजरो से देखनी चाहिए न ही दया की नजरो से देखनी चाहिए। हमें सिर्फ उन्हें समान रूप से देखना चाहिए।

संदर्भ सूचीः

१. खान, एम फिरोज : किन्नर ·था तीसरी दुनिया का सच। विकाश प्रकाशन। आसी, विश्व बैंक। बर्श, कानपुर– २०८०२७। प्रथम प्रकाशन, २०१९ ई।
२. खान, एम फिरोज : थर्ड जेण्डर अतीत और वर्तमान। विकाश प्रकाशन, आ सी, विश्व बैंक, बर्श कानपुर– २०८०२७। प्रथम प्रकाशन, २०१८ ई।
३. गुप्ता, आशीष कुमार, प्रकाश, चन्द्र, गुप्ता, बृजेश कुमारः किन्नर हाशिए का जीवन। सन्मति पब्लिशर्स एण्ड हिस्ट्रीव्यटर्स। बी–३४७, संजय विहार। मेरठ रोड। हापुड़–२४५११०१(३.प्र), प्रथम संस्करण २०२०।
४. गोयल, सतीश : बृहद वात्स्यायन कामसुत्र। डायमंड पाँकेट बुक्स प्रा. लि. ङ्ग–३०। ओखला इंडास्ट्रियल एरिया, फेज– ११। नई दिल्ली– ११००२०।
५. डागा, शीला : किन्नर गाथा। वाणी प्रकाशन। ४६९५, २१ दरियागंज। नई दिल्ली– ११०००१।
६. पट्टनायक, देवदत (मूल), कापूर, रमेश (अनु.), नीलाभ (सम्पा) : शिखण्डी और कुछ अनसुनी काहानियाँ। राजपाल एण्ड सनाज। १५१० मदरसा रोड। कशमीरी गेट। दिल्ली– ११०००६